चूहा नियंत्रण

फसल की अच्छी पैदावार के लिए चूहों से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी जरुरी हैं। खेती, मुर्गीघर, गोदाम, घर, फलोद्यान, गोचर भूमि आदि में चूहों की समस्या अधिक है मानव तथा पालतू पशुओं में चूहे कई प्रकार की बीमारियां फैलाते है। चूहे खाते कम हैं और बिगाड़ ज्यादा करते हैं। क्योंकि :—

चित्र : 1 चूहों के हथियार - निरन्तर बढने वाले दांत

चूहों के अगले दांतों का जोड़ा प्रतिदिन 0.4 मि.मी. या एक साल में 12 से.मी. बढ़ता है। ज्यादा लंबे दांत चूहों को भूखों मार देते है। इनकी घिसाई के चक्कर में कोई भी चीज कुतर ली जाती है।

चूहों का एक जोड़ा एक वर्ष में बढ़कर 800 से 1200 चूहों तक की संख्या में बदल जाया करता है।

चित्र : 2 भारतीय मृग चूहे की मादा नवजात बच्चों के साथ

चूहा नियंत्रण विधियां

1. साफ सुथरी खेती चूहे खरपतवार में ज्यादा फलते फूलते है ।

2. मेड़ की ऊँचाई कम से कम हो । 3. पिंजरों का उपयोग 4. फसल बुवाई से पूर्व सामुहिक स्तर पर चूहा-नियंत्रण कार्यक्रम अपनाए ।

(क) चूहों को आकर्षित करने के लिए एक दिन सादा चुग्गा डालें :- एक किलों ग्राम बाजरी या अन्य अनाज में 20 ग्राम मूंगफली या तिल्ली का तेल मिलायें । दोपहर बाद बिल बंद करदें व दूसरे दिन सुबह चूहों की जाग से पहले 10 ग्राम चुग्गा ताजा खोदे गये बिलों में डाल दें ।

(ख) दूसरे दिन इन्हीं बिलों में विष-चुग्गा डाले एक किलो ग्राम बाजरी + 20 ग्राम तेल + 20 ग्राम जिंक फास्फाइड अच्छी तरह मिलाकर 10 ग्राम विषैला चुग्गा हर एक बिल में डाल दें ।

चित्र : (क) अनाज में तेल मिलाती हुई महिलाएँ

चित्र : (ख) जिंक फासफाईड मिलाती ग्रामीण महिलाएँ

(ग) विष चुग्गा केवल बिलों के अन्दर ही डालें। बिलों के बाहर विष चुग्गा न रखें और न ही उसे मेंड़ पर या झाड़ियों में फैंके इससे अन्य पशु-पक्षियों की जान जा सकती है।

चित्र : (ग) कृषक विष-चुग्गा डालते हुए

(घ) मरे हुए चूहों को इकट्ठा करके जमीन में गहरा दबादें।

(च) शेष बचे चूहों की रोकथाम के लिए एक बार फिर सारे बिल बंद करदें। दुबारा खुले बिलों में 10-15 ग्राम ब्रोमेडिओलोन विष की मोमी-टिकिया डालें। लगभग 10 दिन बाद सारे बिल बंद करदें।

अगर बिल खुल जायें तो ब्रोमेडिओलोन विष की मोमी-टिकिया का उपचार एक बार फिर करलें। इस प्रकार से लगभग 95 से 98 प्रतिशत तक चूहे काबू में आ जाएंगे।

एक चूहा प्रबन्ध अभियान का नतीजा

(छ) सावधानियाँ :- विष या विष-चुग्गा आदि को हाथ से न छुएँ। विष चुग्गा बनाते समय तथा बिलों में विष चुग्गा डालते समय खाने की वस्तु, पानी, तम्बाखू व बीड़ी का प्रयोग बिल्कुल नहीं करें। विष तथा विष-चुग्गों को बच्चों व पालतू जानवरों की पहुँच से दूर रखें। विष चुग्गा बनाने व डालने के काम में ली गई वस्तुओं को नष्ट करदें या जलादें। जिंक

फास्फाइड विष चूग्गा कम से कम तीन महीने के अंतर से काम ले वरना ये कारगर नहीं होगा।

(ज) चूहा नियंत्रण जानकारी हेतु सपर्क करें :- निदेशक, विभागाध्यक्ष कृंतक नियंत्रण,/बाह्य प्रसार/कार्यक्रम विभाग,/कृषि विज्ञान केन्द्र, काजरी जोधपुर-342003

चूहा नियंत्रण

किसान को अपनी फसल से अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए खेत में चूहों से होने वाले नुकसान को रोकना बहुत ही आवश्यक है। ये चूहे फसल के साथ-साथ फलोद्यान, खलिहान, चारागह, जंगलात, अनाज के गोदाम, मुर्गीघर तथा घरेलु सामान को भी बहुत नुकसान पहुँचाते हैं जिससे किसान को बहुत आर्थिक हानि होती है। चूहों के कारण मनुष्य तथा पालतू पशुओं में कई प्रकार की बीमारियां हो जाती है जिनमें जानलेवा प्लेग की महामारी मुख्य है।

चुहों द्वारा विभिन्न प्रकार के नुकसान पहुँचाने का मुख्य कारण इनके शरीर की बनावट में आगे के दो दांतों का तेजी से लम्बा होना मुख्य है। इनके ये दो दांत प्रतिदित 0.4 मि.मि. के हिसाब से एक वर्ष में 12 से. मी. लम्बे हो जाते हैं। इन दांतो के लम्बे हो जाने की अवस्था में चूहे किसी भी प्रकार का भोजन नहीं कर सकते और भूख से मरना पड़ता है। अतः चूहों को प्रतिदिन अपने इन दाँतों की घिसाई करना, इनको छोटे करते रहना आवश्यक हो जाता है। इसी कारण ये प्रतिदिन किसी भी चीज को कुतरते रहते है जिससे दांतों की घिसाई हो जाय एवं ये अधिक लम्बे नहीं बढ़े।

चूहों में बच्चे पैदा करने की शक्ति बहुत होती है। इनके एक जोड़े से एक वर्ष में 800 से 1200 तक चूहे पैदा हो जाते हैं। अतः

यदि इनकी संख्या पर नियंत्रण नहीं रखा जाय तो ये बहुत भारी नुकसान पहुँचाते है ।

इन खतरनाक जीवों को बढने से रोकने के लिए इन बातों पर विशेष ध्यान देना जरुरी है :—

1. साफ सुथरी खेती

फसल में अधिक खरपतवार होने से चूहों को बिल बनाने व छिपने की जगह मिल जाती है और ये ज्यादा सख्या में बढने लगते है ।

2. खेत की मेड़ की ऊंचाई अधिक नहीं रखना

खेत की मे मेंड़ घूहे आसानी से बिल बना लेते हैं । अतः मेड़ छोटी रखने से इनके उपर अच्छा नियत्रण रख सकते हैं ।

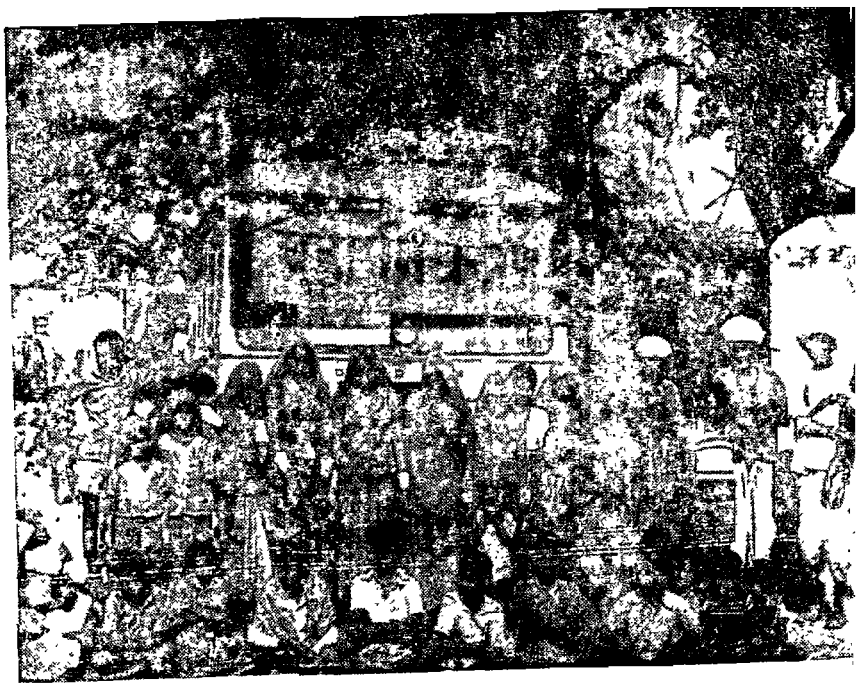

काजरी में म हला कृषकों को चूहा प्रबन्ध में प्रशिक्षण